आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक :-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक -2554 • उदयपुर, बुधवार 22 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

हादसों में हाथ - पैर गंवाये : अब चल पड़े

दुर्घटनाओं में अंग (हाथ–पैर) खोने वाले भाई–बहनों को अक्टूबर में विभिन्न शहरों में निःशुल्क शिविर आयोजित कर कृत्रिम अंग लगाए गए। इससे पूर्व आयोजित शिविरों में कृत्रिम अंग बनाने के लिए प्रोस्थेटिक इंजीनियर द्वारा मैजरमेंट लिया गया। इन शिविरों में जांच कर ऑपरेशन योग्य दिव्यांगों का चयन भी किया गया।

गुरुग्राम– मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से गुरुग्राम (हरियाणा) के सेक्टर–14 स्थित सामुदायिक केन्द्र में एक विशाल दिव्यांग जांच, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 86 दिव्यांगजन ने पंजीयन करवाया। जिनमें से टेक्नीशियन श्री उत्तम चंद ने हादसों में हाथ–पैर गंवाने वाले 13 लोगों के कृत्रिम अंग बनाने के लिए नाप लिया। 10 दिव्यांगों के लिए उनके हाथ–पांव की स्थिति के अनुसार कैलीपर बनाकर लगाए गए। 30 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर और 5 दिव्यांगों को बैसाखी की जोड़ी प्रदान की गई। 3 दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्राइवेट लिमिटेड के प्रबन्धक श्री सुकान्त कुमार थे। अध्यक्षता कम्पनी के ही श्री विजय प्रताप ने की। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री विनोद गुप्ता, श्रीमती कृष्णा अग्रवाल, श्रीमती रूमा विरल व श्रीमती शकुंतला थी। गुरुग्राम आश्रम प्रभारी श्री भंवर सिंह राठौड़ व दिल्ली आश्रम प्रभारी श्री जतन सिंह भाटी ने अतिथियों का स्वागत सम्मान किया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लड्ढा ने संचालन किया।

मालपुरा– संस्थान के तत्वावधान में श्री बारादरी रामचरित मानस मंडल के सौजन्य से मालपुरा (टोंक–राजस्थान) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि अग्रवाल समाज, चौरासी महिला प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती इंदु मित्तल थी। अध्यक्षता भाजपा मालपुरा मंडल के अध्यक्ष श्री त्रिलोक जैन ने की।

शाखा संयोजक श्री सुरेन्द्र मोहन जैन ने बताया कि टेक्नीशियन श्री प्रकाश मेघवाल व श्री नाथू सिंह ने शिविर में 17 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग तथा 16 को कैलिपर लगाए। विशिष्ट अतिथि महिला अग्रवाल समाज की ब्लॉक अध्यक्ष श्रीमती गुंजन मित्तल व समाजसेवी श्री विकास जैन थे। संचालन हरिप्रसाद लड्ढा ने किया।

मुम्बई– सहयोग सेवा ग्रुप, मुम्बई के सहयोग से मुम्बई के बोरीवली–वेस्ट स्थित राजस्थान भवन में संस्थान की स्थानीय शाखा के तत्वावधान में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें करीब 100 से अधिक दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह व श्री प्रकाश मेघवाल ने 33 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग जबकि 49 को कैलिपर लगाए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर पूर्वी– बोरीवली के सांसद श्री गोपाल शेट्टी थे। अध्यक्षता क्षेत्रीय विधायक श्री सुनील राणे ने की। विशिष्ट अतिथि नगर सेवक श्री प्रवीण शाह, ब्राइट ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. योगेश लखानी सहयोग सेवा ग्रुप के श्री यतीन जी भागिया व श्री संजय सेमलानी थे। संस्थान शाखा के संयोजक श्री कमलचंद्र लोढ़ा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लड्ढा व मुम्बई आश्रम के श्री महेन्द्र जाटव थे।

जिले में प्रथम बार निराश्रित बालकों के लिए केरियर काउन्सलिंग शिविर

उदयपुर, 11 दिसम्बर। जिला कलेक्टर, उदयपुर के निर्देशानुसार जिले के 21 निराश्रित बालगृहों में 14 से 17 वर्ष तक आयुवर्ग के 120 बालक–बालिकाओं को केरियर सम्बन्धी काउंसलिंग जिला बालकल्याण समिति, उदयपुर द्वारा नारायण सेवा संस्थान बड़ी परिसर में शनिवार को दी गई।

निराश्रित बालकों के उज्ज्वल भविष्य व आजीविका चयन में आवश्यक दिशा–निर्देश एवं उद्देश्य निर्धारित करने के लिए जिला बाल संरक्षण ईकाई व जिला कलेक्टर के निर्देशन में एक दिवसीय केरियर गाइडेंस कार्यक्रम नारायण सेवा में आयोजित हुआ। शिविर में बालकों को अपने भविष्य हेतु कौन–सा रोजगार विकल्प चुनें? एवं कैसे इस हेतु मार्गदर्शन प्राप्त करें? विषय के निशांत जनार्दन राय नागर विद्यापीठ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. लालाराम जी जाट, डॉ. प्रिंस जी, डॉ. अंकित जी त्रिवेदी द्वारा सम्बोधित करते हुए मार्गदर्शन दिया गया। सीडब्ल्यूसी. अध्यक्ष ध्रुवकुमार जी कविया और नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बच्चों को केरियर संवारने की आवश्यक जानकारी एवं प्रेरणा दी। संस्थान के प्रोजेक्ट प्रभारी संजय जी दवे एवं विभिन्न पदाधिकारियों ने भी बालकों को बेहतर भविष्य बनाने का मार्गदर्शन दिया।

मीरा निराश्रित बालगृह, मदर टेरेसा बालिकागृह, राजस्थान बालकल्याण समिति, जीवतराम बालकगृह– झाड़ोल, भगवान महावीर निराश्रित बालगृह, सेवा परमोधर्म बालगृह, जीवनज्योति–सुखेर, अरन्य दर्शन–सेमारी समिधा संस्थान–सलोरा एवं राजकीय बालक–बालिका गृह आदि के बच्चों सहित सभी गृहों के अधीक्षकगण समारोह में उपस्थित रहे। बालकों के साथ 'मेरे सपने, मेरा केरियर' विषय पर भी खुली चर्चा हुई। जिसमें उपस्थित बालकों ने खुले मन से कई प्रश्न किए। जिसका जवाब सी. डब्ल्यू.सी. अध्यक्ष एवं प्रशान्त अग्रवाल ने दिए। कार्यक्रम का संचालन जितेन्द्र जी वर्मा ने किया।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह

रविवार 2 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से

स्थान

खत्री धर्मशाला, 58/23 बैंक ऑफ बड़ौदा के पास, बिरहाना रोड, कानपुर, उ.प्र. 9351230395

महाराजा अग्रसेन, सरस्वती विद्या मंदिर इन्टर कॉलेज, शिवपुरी मार्ग, झांसी (उ.प्र.) 7023101155

वैश्य समाज धर्मशाला, सेक्टर-4, गुरुग्राम, हरियाणा, 8306004802

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ - पांव) माप शिविर
रविवार 2 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से

स्थान

सेन्ट लॉरेंस स्कूल, अपाजी धाम के सामने आत्माराम, भोईर चौक आधारवाड़ी जेल रोड, कल्याण, महाराष्ट्र,

हनुमान वाटिका, करनाल रोड, कैथल, हरियाणा

भारत विकास विकलांग न्यास एवं संजय आनन्द विकलांग अस्पताल एवं रीसर्च सेंटर, मोहल्ला- पहाड़ी, अन्तर्राज्यीय बस स्टेण्ड के सामने पो- लक्ष्मीनगर, पटना बिहार

महाराज अग्रसेन इन्टर कॉलेज शिवपुरी रोड, झांसी, उ.प्र.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मैंने तो सोचा अरे मुझे भी खुशी है राम–भरत में भेद नहीं। मेरा भरत बेटा है वैसे ही राम बेटा है। मेरे तो राम बड़ा बेटा है। वो तो खेल ही खेल में भरत को जीता देता है। खेल खेलते हैं ना? तो बड़े वाले रामजी को लगता था मेरे भरत भैया को जीता दूं। मेरे शत्रुघ्न जी को जीता दूं। मेरे लक्ष्मणजी को जीता दूं। ऐसा बेटा है, फिर भी बहकावे में बहक गई। जिस कैकेयी ने बाद में चित्रकूट में पधारी थी भरत जी के साथ। भरत जी ने कहा था–

सिर बल जाउँ, उचित अस मोरा।
सेवा धरम परम कठोरा।।

उस समय कैकेयी जी भी गई थी। बाद में बड़ी पछताई–थूके भली मुझ पर त्रेलोक्य थूके। अभी क्या हो गया? अभी ये हो गया कि मंथरा की बातों में आ गई।

कैकेयी सुता सुनत कटुबानी।
कहिन सखत कछु सह सुखानी।

हाँ, ओहो ऐसा होगा न वैसा होगा। अरे! देख कर इतना डरा दिया और कैकेयी की मति मारी गई। लोग तो कैकेयी का भी नाम नहीं रखते–भैया। कई बहने मिलती है, मैं तो सुमित्रा हूँ। हाँ,

वीर न अपना देते हैं, न वे औरों का लेते हैं।
वीरों की जननी हम है, भिक्षा मृत्यु सम है।

साकेत में सब आता है। चिरगांव झांसी के मैथिलीशरणजी गुप्त ने लिखा था। सुमित्रा जी नाम रख लेते हैं, कोई कौशल्याजी खूबनाम रखते हैं। पर कैकेयी नाम नहीं रखते। शूर्पणखां नाम नहीं रखते। कोई मंथरा नाम नहीं रखते। तो बोली मंथरा– अरे, आप चिंतित मत होओ। आज की रात नहीं निकलनी चाहिये। लो ये कल मुहीं आ गई। ये युग को खराब करने आई है। ये अयोध्या को रुलाने आ गई। ये सबको दुःखी करने आ गई। और कहती है– आज की रात नहीं निकलनी चाहिये।

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

खुशी की तलाश

जीवन की खुशी इसमें नहीं है कि आप कितने खुश हैं, बल्कि इसमें है कि आपके कारण कितने लोग खुश हैं। एक धनाढ्य महिला प्रायः उदास रहती थी, लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों है? वह खुशी की तलाश में किसी मनोविज्ञानी के पास गई। वह बोली 'मुझे हर समय खालीपन का एहसास होता है जीने का मकसद समझ में नहीं आता।' मनोचिकित्सक ने पास ही कमरे की सफाई कर रही एक महिला को अपने पास बुलाया।

चिकित्सक ने अमीर महिला से कहा, 'अब यह देवी आपको बताएंगी कि उन्हें अपनी खुशी कैसे मिली? मैं चाहता हूं कि आप उन्हें सुनें।' देवी ने झाड़ू नीचे रखी और डॉक्टर के कहने पर पास वाली कुर्सी पर बैठ गई। उसने कहा, 'मेरे पति की मृत्यु मलेरिया से हुई थी। तीन माह बाद मेरा इकलौता बेटा भी कार दुर्घटना में चल बसा। मेरे लिए अब कुछ नहीं बचा था। ना मैं सो पाती थी, ना भूख लगती थी, मुस्कुराहट तो कभी चेहरे पर आई ही नहीं। मरने के विचार आते थे। फिर एक दिन बिल्ली का एक छोटा–सा बच्चा मेरे साथ घर तक आया। उसकी हालत देखकर मुझे दुःख हुआ। बाहर ठंड थी तो मैं उसे अंदर ले आई। उसे दूध दिया। दूध पीने के बाद वह मेरे पास बैठ गया और सूनी आंखों से मुझे ताकने लगा। मैंने दुलार से उसके पीठ पर हाथ फेरा। बच्चा अब मेरी गोद में आकर मेरे हाथ को चाटने लगा।

उसकी इस हरकत पर मुझे हंसी आ गई। यह लम्बे समय बाद चेहरे पर आई मुस्कान थी। मुझे लगा कि बिल्ली के बच्चे की मदद करके जब मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई है, अगर इसी तरह मैं और दुःखी लोगों के आंखों के भी आंसू पौंछ सकूं तो कितनी खुशी मिलेगी। अगले दिन मैंने घर में ही बिस्किट बनाएं और पड़ोसी बीमार के यहां जाकर उसका हाल– चाल पूछते हुए उसे दे दिए। वह बहुत प्रसन्न हुआ और मेरे प्रति कृतज्ञता जता रहा था। ऐसा करना मेरा रोज का कम बन गया।

अब मुझे लगता है कि मैं दुनिया की सबसे सुखी इंसान हूँ। चैन से खाती हूँ, ढ़ग से सोती हूँ और हर समय खुश रहती हूँ। मैंने यह जान लिया कि दूसरों को खुशी देने में ही खुशी मिलती है।

सम्पादकीय

मानव के लिये जितने सद्गुणों की परिकल्पना की गई है, उसमें परोपकार भी एक प्रमुख गुण है। उपकार मूल शब्द है। यह स्व के लिए भी प्रयुक्त होता है व पर के लिए भी। स्व पर किया गया उपकार, उपकार की श्रेणी में नही आता है, यह बस अपने प्रति मोह है। सही उपकार तो परोपकार ही है। दूसरों का उपकार सोचेंगे तो अपना भी उपकार हो जायेगा। मन विराट भावों से भर पायेगा। इसके विपरीत यदि स्व के उपकार की सोचेंगे तो क्षुद्र भावों का संचरण होगा और हम सब स्वार्थकेन्द्रित हो जायेंगे। परमात्मा ने मनुष्य की रचना ही परमार्थ के लिये की है। स्वार्थ तो हरेक जीव का स्वाभाविक कर्म है। जो अविकसित या पूर्ण विकसित पशु हैं वे सभी स्वार्थ में ही जीते हैं। परार्थ का वरदान केवल मनुष्य को ही है, तो परोपकार उसका आवश्यक गुणधर्म होना ही चाहिये। परोपकार का अर्थ यह नही है कि खुद की चिंता त्याग दें। पर हमारे कारण न किसी की हानि हो, न कोई दुःखी हो तथा न कोई आहत हो। परोपकार स्थूल या सूक्ष्म भाव का वह हर हाल में श्रेष्ठ है।

कुछ काव्यमय

परोपकारी जी रहे,
जितने भी जन आज।
देख देखकर लग रहा,
ईश्वर का अंदाज।।
परोपकारी पुण्य से
सहज मिलेगा मोक्ष।
यह तो सीधा दीखता,
बाकी सभी परोक्ष।।
वे ही मानव देव हैं,
जो करते उपकार।
इस धरती पर कर रहे,
देवलोक साकार।।
परोपकार कठिन नहीं,
हो मन में यदि भाव।
दीनदुखी को देखकर,
होता सहज लगाव।।
परोपकारी गुण दिया,
प्रभु ने सोच-विचार।
खुद तो तरना ही रहे,
तारेगा संसार।।

- बरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

कृतज्ञता भाव

कहते हैं कृतघ्न के शव को कुत्ते भी नहीं खाते, जबकि कृतज्ञ को स्नेह–सम्मान सुख वैभव अनायास ही मिल जाते हैं। कौन है कृतघ्न, और कौन कृतज्ञ, शास्त्रकारों, भाषा– शास्त्रियों ने इस प्रश्न की सुन्दर व्याख्या की है। 'कृतं जानातीति सः कृतज्ञः' अर्थात् अपने प्रति (दूसरों द्वारा) किये गये स्नेह–करूणा– दान–सहयोग– सेवा– उपकार को जो सदैव जानता है, (स्मरण रखता हैं) वह 'कृतज्ञ' है। और 'कृतं हन्तीति सः कृतघ्नः' अर्थात् अपने प्रति (दूसरों द्वारा) किये गये स्नेह–करूणा –उपकार आदि का जो वध करता है। (विस्मरण करता है, भुला देता हैं) वह 'कृतघ्न' है।

प्रभु कृपा से हमने मानव जीवन पाया है। प्रभु कृपा से ही आकाश–वायु– जल– अग्नि–पृथ्वी ने शब्द–स्पर्श– रूप–रस –गन्ध से हमारा पोषण किया है, हमें अन्न–वस्त्र–आवास–वैभव– परिवार–समाज मिला है। उसी प्रभु के प्रसाद से हमारे जीवन में 'सत्यं शिवं

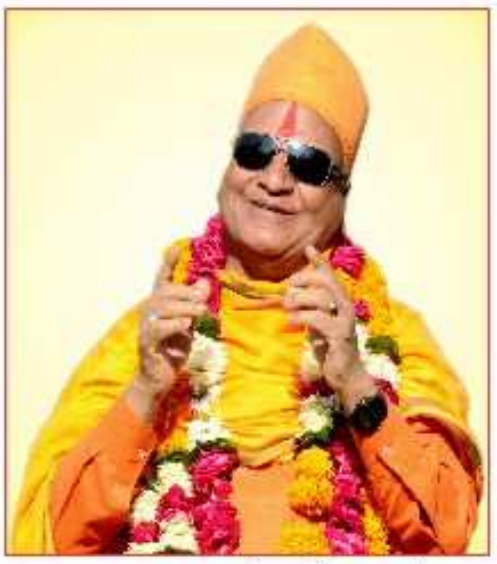

सुन्दरम्' का प्रसार होता है। हम ये भाव मन में निरन्तर स्थिर रखते हुए उस प्रभु के प्रति आभारी बने रहें, यही 'कृतज्ञ' होने का भाव है। आपने टी.वी. चैनल्स, सन्दीपन अथवा शिविर, समारोह आदि में संस्थान के सेवा प्रकल्पों से प्रेरणा लेकर किसी दिव्यांग के लिए ऑपरेशन सहयोग, भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, निर्धन हो अन्न–वस्त्र, रोगी को दवाई, दुःखी को सहानुभूति के रूप में प्रभु कृपा से कोई न कोई सेवा अवश्य की होगी। आप द्वारा की गई आपने टी. वी. चैनल्स, सन्दीपन अथवा शिविर, समारोह आदि में संस्थान के सेवा प्रकल्पों से प्रेरणा लेकर किसी दिव्यांग के लिए औपरशन सहयोग, भूखे को भोजन, प्यासे का पानी, निर्धन को अन्न–वस्त्र, रोगी को दवाई, दुःखी को सहानुभूति के रूप में प्रभु कृपा से कोई न कोई सेवा अवश्य की होगी।

आप द्वारा की गई ज्ञात–अज्ञात उन सभी सेवाओं के लिए आपके प्रति मेरे कृतज्ञता भाव। आइये। प्रतिदिन प्रातः उठते ही (कम से कम 15 सेकण्डस के लिए) प्रभु से हमें प्राप्त उस पूर्वोक्त कृपा प्रसाद के लिए हम प्रभु के प्रति कृतज्ञता भाव से अन्तर्मन को लबालब करते हुए बन्द आँखों से इस तरह भाव विह्वल हो कि आनन्द की स्पष्ट झलक न केवल हमारे चेहरे पर, अपितु तन–मन, रोम–रोम में व्याप्त हो जाय।

दोनों हाथ ऊपर उठाये तीन बार उस कृतज्ञता आह्लाद के लिए वाह! वाह! वाह! शब्दों का उच्चारण करें।' प्रभु कृपा से प्रभु के प्रति कृतज्ञता भाव हमारा जीवन प्रशस्त करे– इस मंगल कामना के साथ।

–कैलाश 'मानव'

सेवा की शक्ति

छोटा चन्द्रमा बड़े सूर्य को भी ग्रहण लगा देता है। अगर हम सही जगह पर, सही समय पर, सही काम करें, तो हम भी बड़े–बड़े काम कर सकते हैं।

एक बार संत राबिया काबा के दर्शन के लिए जा रही थीं। संत राबिया एक सूफी संत थीं। उन्होंने गरीबों और दुःखियों की सेवा को ही पैगम्बर सेवा समझा था। वह किसी भी मंदिर–मस्जिद में नहीं जाती थीं, लेकिन परिवार के कहने से काबा जाने के लिए राजी हुई।

काबा जाते हुए जब रास्ते में वे एक जंगल से गुजरीं, तो उन्हें एक सूखे हुए पेड़ के खोल में, एक कुत्ता फंसा हुआ दिखा। राबिया को दया आ गई और उन्होंने उसे पेड़ से निकालकर अपनी गोद में उठा लिया। उन्होंने देखा कि कुत्ता प्यासा है। इधर–उधर पानी ढूंढने की कोशिश की तो कुछ दूरी पर एक कुआँ नजर आया। कुएँ के पास जाने पर पता चला कि वहाँ पर बाल्टी तो थी पर रस्सी नहीं थी।

उनकी नजर अपने कपड़ों पर जाती है। उन्होंने बिना वक्त गंवाए अपने कपड़ों को फाड़कर रस्सी बनाई और बाल्टी को उससे बांधकर कुएँ में भरने के लिए डाला, परन्तु रस्सी पानी से थोड़ी दूर रह गई, उनको बहुत दुःख हुआ। संत राबिया दुःखी मन से तरकीब ढूढ़ने लगीं। तभी उनका ध्यान अपने केशों पर गया, जो बहुत लंबे थे।

उनके मन में जीव सेवा की भावना इतनी प्रबल थी कि उन्होंने दर्द की परवाह किए बिना तुरंत अपने केशों को जड़ से उखाड़ लिया और रस्सी से जोड़ दिया। लम्बे केशों के रस्सी के साथ जुड़ते ही रस्सी लंबी हो गई और बाल्टी पानी तक पहुँच गई। संत राबिया ने 5–6 बार पानी निकाल कर उस मरणासन्न कुत्ते को पिलाया, जिससे वो तृप्त हो गया और उसकी जान बच गई। तृप्त होते ही कुत्ता अन्तर्धान हो गया। संत राबिया सिर के बाल उखड़ जाने के कारण लहुलुहान हो गई थीं और अब उन्हें पीड़ा भी महसूस हो रही थीं वह बार–बार मिन्नतें कर रहीं थीं– हे काबा शरीफ! मैं आपके पास कैसे आऊँ? अपनी नेक बंदी की पुकार अल्ला–ताला ने सुन ली, अचानक बियाबान जंगल रोशनी से जगमगा उठा। काबा शरीफ के पार्षद उस रोशनी में प्रकट हुए और बोले कि संत राबिया आपको काबा आने की जरूरत नहीं, खुदा खुद चलकर आपसे मिलने आ गए हैं। इससे सिद्ध होता है कि भक्त के पास भगवान स्वयं चले आते हैं। औरों की मदद करो...

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

ऐसी कठिन परिस्थितियों के दिनों में ही एक दिन वह अपने एक परिचित को लेने हवाई अड्डे गया। वे अपने मकान हेतु मार्बल खरीदने उदयपुर आये थे नारायण सेवा की भी सहायता करने का उनका मन था। ऐसा संकेत उन्होंने कैलाश को दिया था। एयरपोर्ट पर कैलाश को देखते ही वे पूछ बैठे कि उसके चेहरे की रंगत क्यूं उड़ी हुई है, कैलाश ने कहा–ऐसी कोई बात नहीं है, होगी भी तो भगवान है, वहीं जाने कैसे क्या चलाना है।

कैलाश की बातों में पीड़ा और लाचारी सहज झलक रही थी। वे मार्बल खरीदने के लिए अपने साथ चार लाख रु लाये थे, सोचा था इसमें से 25 हजार रु नारायण सेवा को दे देंगे। कैलाश की बातें सुन उन्होंने मार्बल खरीदना टाल दिया और पूरे के पूरे चार लाख कैलाश के हाथों में दे उसे अपना काम आगे बढ़ाने को कहा। कैलाश ने मुसीबत की इस घड़ी में हुई इस कृपा को उस व्यक्ति के रूप में साक्षात् भगवान का आना ही समझा। उन्हीं दिनों जसवन्तगढ़ में शिविर चल रहा था। प्रसिद्ध जैन संत पुष्कर मुनि जी व देवेन्द्र मुनि जी को भी शिविर में आमंत्रित किया गया था। शिविर में लगभग 4000 वनवासियों ने भाग लिया था।

जब कैलाश अमेरिका से लौटा ही था विश्व के सबसे समृद्ध और आधुनिक देश में कुछ दिन व्यतीत करने के बाद अपने यहां भी कुछ करने का जोश उमड़ रहा था। हिरण मगरी से. 4–5 की लिंक सड़क तब झाड़–झंखाड़, गंदगी से अटी पड़ी थी। इस सड़क को साफ करने का नशा चढ़ा। कुछ लोगों को लेकर वह इस काम में जुट गया, शुरूआत झाड़िया साफ करने से की। लोग इन्हें इस तरह काम करते देखते तो इनकी मजाक उड़ाते। कैलाश का मन उदास हो जाता। एक दिन एक व्यक्ति ने इस कार्य की प्रशंसा की तो उसने अपनी हताशा व्यक्त करते हुए कहा कि अच्छा काम कर रहे हैं तो भी लोग मजाक उड़ाते हैं। उस व्यक्ति ने कैलाश को निराश नहीं होने को कहा और बताया कि दुनिया का नियम बन गया है, कोई भी अच्छा कार्य करता है तो शुरू शुरू में सब उसकी मजाक उड़ाते ही है, फिर उसकी उपेक्षा करते हैं और एक दिन उसे स्वीकार कर उसकी प्रशंसा भी करने लगते हैं। कैलाश को इस बात से बल मिला और दुगुनी शक्ति से इसमें लग गया, सरकार को भी चिट्ठी लिखी और उनसे भी सहयोग लिया।

अंग - 189

गर्म पानी पीने के फायदे

1 अगर आपका मेटाबॉलिज्म कमजोर है तो आपके लिए गर्म पानी का सेवन करना फायदेमंद रहेगा अगर आप वजन घटाना चाहते हैं तो भी गर्म पानी पीना बहुत फायदेमंद रहेगा।

2 अगर आपको हमेशा सर्दी रहती है तो गर्म पानी पीना उचित रहेगा। गर्म पानी पीने से गला भी ठीक रहता है हल्की सर्दी और जुकाम में इसके सेवन से आराम मिलता है।

3 गर्म पानी पीने से शरीर की अशुद्धियां बहुत आसानी से साफ हो जाती है। जब आप गर्म पानी पीते हैं तो आपके शरीर का तापमान बढ़ने लग जाता है। जिससे पसीना आता है और इसके माध्यम से शरीर की अशुद्धियां दूर हो जाती है।

4 गर्म पानी पीने बढ़ती उम्र के लक्षण जल्दी नजर नहीं आते इसका सबसे बड़ा कारण ये है कि गर्म पानी पीने से शरीर की सारी गंदगी बाहर निकल जाती है। जिस वजह से बढ़ती उम्र अपना असर ज्यादा नहीं दिखाती।

5 इसके अलावा गर्म पानी का सेवन बालों और त्वचा के लिए भी बहुत फायदेमंद हैं इससे पिंपल्स की समस्या दूर हो जाती है और बाल चमकदार बनते हैं यह बालों की ग्रोथ के लिए के लिए भी बहुत फायदेमंद है।

6 गर्म पानी पीने से पाचन क्रिया अच्छी रहती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।।

मैंने तो ऐसा कभी नहीं देखा। अभी 2020 में महायुद्ध से भी बड़ा महायुद्ध कोरोना वायरस, जो आँखों से दिखाई नहीं देता, स्पर्श नहीं कर सकते। कानों से सुन नहीं सकते, कैसा कमजोर हो गया इंसान? सोशल डिसटेंस बनाए रखिए। हर एक घंटे में हाथ धोइए। घर में रहिए। एक वायरस ने इंग्लैण्ड को हिला दिया। भारत में भी अभी दो तीन दिन से कैलाश सावचेती करो। बचाव रखो। जब 1986 का सिंहावलोकन होता है 26 जनवरी को बिना एक भी रुपया लिए 14–14 डॉ साहब चल दिये।

डॉ ए.के. पेण्डसे साहब चल रहे हैं। विनया जी पेण्डसे चल रही है। उनकी धर्मपत्नी चार चार हजार आदिवासी झाड़ोल में जुटे। शराब छोड़िए, जीवन मोड़िए। राम राम बोलिए। बहुत अच्छा कीर्तन भी हुआ भजन भी हुआ। शराब भी छुड़ाई। बच्चों को स्नान भी कराया जा रहा है। हेंडपंप के नीचे अरे! मंजन कर लो। कोई कोई साधक अपनी अंगुली से मंजन करा रहे हैं। डॉ. साहब राम राम बोलो– नाखून काट रहे हैं। अदभुत विहंगम दृश्य, दवाइयाँ जम गई। डॉ. साहब देखने लग गए। पर्ची लिखते ही उनको दवाइयाँ मिल जाती थी। पहले आप इलाज करा लो, फिर पौष्टिक आहार देंगे। कूपन ले लो बात नहीं माने तो ये पीले रंग के कूपन 1 से 100 तक के है। फिर लाल रंग के कूपन का नंबर आयेगा। फिर सफेद किस शक्ति ने करा दिया, 400 से अधिक बीमार, 400 से अधिक बीमारों का इलाज। 1123 अन्य सामान का वितरण, कपड़े लेडिज का लेडिज लो, जेन्टस का जेन्टस लो। ये बच्चों के कपड़े।

पुनः बस में बैठे। बड़ा मजा आया। सुबह से भोजन की याद नहीं आई, 3.30 बजे भोजन किया पुड़ी है आलू की मरकी सब्जी है, अचार है। सुबह तीन साढ़े तीन बजे भोजन कमला जी ने तैयार किया है। सब के सहयोग से।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 316 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक: कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व: नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल: ई, डी-71 बापा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक: न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियों का गुडा, उदयपुर
सम्पादक: लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल: mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. RJ/UD/29-154/2021-2023